REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 8 | MAY - 2024

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में हिंदी साहित्य: सृजनात्मकता, लेखकत्व और साहित्यिक प्रामाणिकता का पुनर्विचार

Dr. A. V. Nandaniya
Associate Professor,
Shri V. M. Mehta Muni. Arts & Commerce College, Jamnagar.

प्रस्तावना

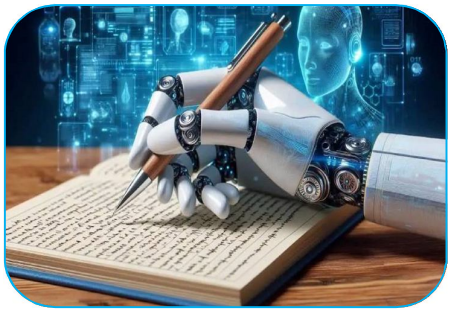

मनुष्य ने जब पहली बार अपने अनुभवों को भाषा में व्यक्त किया होगा, तभी से साहित्य की यात्रा आरंभ हुई होगी। शब्दों के माध्यम से अनुभव को स्मृति में सुरक्षित करना, भावनाओं को अभिव्यक्ति देना, कल्पना को आकार देना और अपने समय के सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ को दर्ज करना साहित्य की मूल प्रवृत्तियों में रहा है। साहित्य इसलिए केवल शब्दों का विन्यास नहीं है; वह मनुष्य के अनुभव, संवेदना, कल्पना, स्मृति और चेतना का रचनात्मक रूपांतरण है। लेकिन आज तकनीकी विकास के जिस दौर में हम प्रवेश कर चुके हैं, वहाँ यह प्रश्न तेजी से महत्वपूर्ण होता जा रहा है कि क्या साहित्यिक सृजन केवल मनुष्य की विशिष्ट क्षमता रह गया है?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात Artificial Intelligence ने भाषा और साहित्य के क्षेत्र में इस प्रश्न को नई गंभीरता प्रदान की है। विशेष रूप से Generative AI और Large Language Models के विकास ने ऐसी प्रणालियों को संभव बनाया है जो मनुष्य की भाषा में कविता, कहानी, निबंध, संवाद और आलोचनात्मक सामग्री तक तैयार कर सकती हैं। ChatGPT जैसी प्रणालियों के व्यापक प्रसार के बाद साहित्य और तकनीक के संबंध को लेकर दुनिया भर में नई बहस शुरू हुई है। अब प्रश्न केवल यह नहीं है कि मशीन मनुष्य की सहायता से कितना अच्छा लिख सकती है, बल्कि यह भी है कि **मशीन द्वारा उत्पन्न पाठ को साहित्य कहा जाए तो उसका लेखक कौन होगा?** और उससे भी महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि **साहित्यिक सृजनात्मकता और प्रामाणिकता का अर्थ क्या रह जाएगा?**

यहीं से हिंदी साहित्य के लिए एक नया विमर्श आरंभ होता है।

साहित्य और तकनीक का बदलता संबंध

साहित्य और तकनीक का संबंध नया नहीं है। मुद्रण तकनीक ने साहित्य के प्रसार को व्यापक बनाया, रेडियो ने कविता और कहानी को श्रव्य माध्यम दिया, सिनेमा ने साहित्यिक कथाओं को दृश्य रूप प्रदान किया और इंटरनेट ने साहित्य को भौगोलिक सीमाओं से मुक्त कर दिया। ब्लॉग, ई-पुस्तक, ऑनलाइन पत्रिकाएँ और सोशल मीडिया ने साहित्य के पाठक और लेखक दोनों की भूमिका में परिवर्तन किया।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता इन सभी परिवर्तनों से अलग इसलिए है क्योंकि यह केवल साहित्य के **प्रसार का माध्यम** नहीं है; यह स्वयं **भाषिक सामग्री के निर्माण** में भाग लेने लगी है। AI अब केवल किसी लेखक की रचना को टाइप, संपादित या अनुवादित करने वाली तकनीक नहीं रह गई है। वह निर्देश के आधार पर एक नया पाठ भी उत्पन्न कर सकती है।

यही परिवर्तन साहित्यिक चिंतन के सामने सबसे बड़ी चुनौती प्रस्तुत करता है।

यदि किसी लेखक ने AI को निर्देश दिया—"एक ऐसी हिंदी कविता लिखो जिसमें अकेलेपन और महानगरीय जीवन की संवेदना व्यक्त हो"—और AI ने कुछ ही क्षणों में कविता प्रस्तुत कर दी, तो क्या वह कविता लेखक की है? यदि लेखक ने उसमें परिवर्तन किए, कुछ पंक्तियाँ हटाईं और कुछ नई पंक्तियाँ जोड़ीं, तो लेखकत्व किसका होगा? और यदि लेखक ने केवल AI से प्राप्त पाठ को प्रकाशित कर दिया, तब?

इन प्रश्नों का कोई सरल उत्तर नहीं है।

सृजनात्मकता: मनुष्य की विशिष्टता या मशीन की क्षमता?

साहित्य में सृजनात्मकता का अर्थ केवल कुछ नया लिख देना नहीं है। एक साहित्यकार अपने समय, समाज, जीवन-अनुभव, स्मृतियों और संवेदनाओं को एक विशिष्ट कलात्मक रूप देता है। प्रेमचंद के किसान, निराला की मानवीय संवेदना, महादेवी वर्मा की करुणा, मुक्तिबोध की बेचैनी या निर्मल वर्मा की अस्तित्वगत संवेदना को केवल शब्दों के संयोजन से नहीं समझा जा सकता। उनके साहित्य के पीछे एक विशिष्ट जीवन-दृष्टि और अनुभव-संसार है।

AI द्वारा निर्मित पाठ इस संदर्भ में एक जटिल स्थिति उत्पन्न करता है। वह भाषा के patterns को पहचानकर अत्यंत प्रभावशाली वाक्य और संरचनाएँ निर्मित कर सकता है।

लेकिन क्या भाषा की संरचनात्मक क्षमता को मानवीय सृजनात्मक चेतना के बराबर रखा जा सकता है?

यही वह बिंदु है जहाँ **नवीनता और सृजनात्मकता के बीच अंतर** करना आवश्यक हो जाता है।

AI नया पाठ उत्पन्न कर सकता है। वह अप्रत्याशित शब्द-संयोजन कर सकता है और विभिन्न साहित्यिक शैलियों का अनुकरण कर सकता है। लेकिन साहित्यिक सृजनात्मकता का प्रश्न इससे आगे जाता है। सृजनात्मकता में केवल नया निर्माण नहीं, बल्कि **अर्थ का निर्माण** भी शामिल है।

एक मनुष्य दुःख पर कविता इसलिए लिख सकता है क्योंकि उसने दुःख को जिया है उसे महसूस किया है या उसके सामाजिक और मानवीय अर्थों से गुजरा है। AI दुःख पर अत्यंत प्रभावशाली कविता लिख सकता है, लेकिन वह दुःख को मनुष्य की तरह अनुभव नहीं करता। इस अंतर को समाप्त कर देना साहित्य और भाषा दोनों के स्वरूप को अत्यधिक सरल बना देना होगा।

फिर भी AI की क्षमता को केवल नकार देना भी उचित नहीं होगा। समकालीन साहित्यिक अध्ययन में AI-generated literature को लेकर यह चर्चा तेजी से बढ़ी है कि मशीन और मनुष्य के बीच सहयोग से बनने वाली रचना पारंपरिक लेखकत्व की सीमाओं को किस प्रकार बदलती है।

इसलिए भविष्य का प्रश्न शायद यह नहीं होगा कि **"AI रचनात्मक है या नहीं?"**, बल्कि यह होगा कि **"AI के साथ काम करते हुए मानवीय सृजनात्मकता का स्वरूप क्या हो जाता है?"**

लेखक कौन है?

साहित्य में लेखक की अवधारणा लंबे समय से विचार का विषय रही है। Roland Barthes ने अपने प्रसिद्ध निबंध *The Death of the Author* में लेखक-केंद्रित अर्थ-निर्धारण पर प्रश्न उठाया था। Michel Foucault ने भी "author" को केवल व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक विशिष्ट सांस्कृतिक और विमर्शात्मक कार्य के रूप में देखा। इस प्रकार आधुनिक साहित्यिक सिद्धांत पहले ही यह प्रश्न उठा चुका था कि रचना का अर्थ केवल उसके लेखक की मंशा से निर्धारित नहीं होता।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस बहस को और अधिक जटिल बना देती है।

आज एक साहित्यिक पाठ के निर्माण में कम-से-कम तीन स्तरों की भूमिका दिखाई दे सकती है—**मानव लेखक, AI प्रणाली और पाठक**। मानव निर्देश देता है, AI पाठ उत्पन्न करता है, मानव उसे चुनता अथवा संपादित करता है और पाठक उसे अर्थ प्रदान करता है।

ऐसी स्थिति में लेखकत्व को एक स्थिर पहचान के बजाय एक **प्रक्रिया** के रूप में देखने की आवश्यकता पड़ सकती है।

यदि AI को केवल एक उपकरण माना जाए, तो लेखक मनुष्य ही रहेगा। जैसे कलम, टाइपराइटर या कंप्यूटर लेखक नहीं होते, वैसे ही AI भी केवल एक उन्नत उपकरण है। लेकिन यदि AI पाठ की संरचना, भाषा, शैली और अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण योगदान करता है, तो उसे केवल पारंपरिक अर्थ में "उपकरण" कहना भी पर्याप्त नहीं होगा।

हालिया साहित्यिक विमर्श इसी बदलती स्थिति की ओर संकेत करता है। AI-generated literature पर प्रकाशित अध्ययनों में authorship और creativity की पारंपरिक धारणाओं के अस्थिर होने तथा human-machine collaboration के नए रूप सामने आने की चर्चा की गई है।

इसलिए संभव है कि भविष्य में साहित्य में "एक लेखक" की अवधारणा के साथ-साथ **सह-रचना** (co-creation) और **मानव–मशीन सहयोग** जैसी अवधारणाएँ भी महत्वपूर्ण हों।

साहित्यिक प्रामाणिकता का प्रश्न

लेखकत्व के बाद सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न साहित्यिक प्रामाणिकता का है।

किसी रचना को प्रामाणिक कहने का अर्थ केवल यह नहीं है कि वह मौलिक शब्दों में लिखी गई है। प्रामाणिकता का संबंध लेखक की संवेदना, अनुभव, सांस्कृतिक संदर्भ और रचनात्मक ईमानदारी से भी है।

AI के संदर्भ में यह प्रश्न इसलिए कठिन है क्योंकि मशीन अत्यंत मानवीय भाषा में लिख सकती है। पाठक को यह अनुभव हो सकता है कि कविता किसी संवेदनशील मनुष्य ने लिखी है, जबकि वास्तव में वह AI द्वारा उत्पन्न की गई हो।

आज यह अंतर करना भी लगातार कठिन होता जा रहा है कि कोई पाठ मनुष्य ने लिखा है या AI ने। हालिया सार्वजनिक चर्चाओं में AI-generated writing की पहचान, AI detectors की विश्वसनीयता और गलत पहचान से होने वाली प्रतिष्ठागत हानि को लेकर भी बहस सामने आई है।

इस स्थिति में साहित्यिक प्रामाणिकता को केवल "मनुष्य द्वारा लिखा गया" और "मशीन द्वारा लिखा गया" के द्वैत में बाँटना पर्याप्त नहीं होगा।

इसके बजाय हमें यह देखना होगा कि—

- रचना का मूल उद्देश्य क्या है?
- AI की भूमिका कितनी है?
- लेखक ने AI-generated सामग्री में कितना हस्तक्षेप किया?
- क्या लेखक ने AI के उपयोग का खुलासा किया है?
- रचना में लेखक की स्वतंत्र रचनात्मक agency कितनी है?
- पाठ का सांस्कृतिक और अनुभवात्मक संदर्भ कितना प्रामाणिक है?

इन प्रश्नों के आधार पर साहित्यिक प्रामाणिकता की नई अवधारणा विकसित की जा सकती है।

हिंदी साहित्य के सामने विशिष्ट चुनौती

हिंदी साहित्य के संदर्भ में AI का प्रश्न केवल सृजनात्मकता तक सीमित नहीं है। हिंदी एक बहुस्तरीय भाषा है जिसमें अनेक बोलियाँ, क्षेत्रीय भाषिक रूप, लोक-अभिव्यक्तियाँ, मुहावरे और सांस्कृतिक संदर्भ समाहित हैं।

किसी AI प्रणाली का हिंदी में व्याकरण की दृष्टि से सही वाक्य बनाना और हिंदी की सांस्कृतिक आत्मा को समझना—दो अलग बातें हैं।

हिंदी साहित्य में "गाँव", "माँ", "मिट्टी", "चूल्हा", "बरगद", "पगडंडी", "मेले" या "त्योहार" जैसे शब्द केवल शब्द नहीं हैं। उनके भीतर सामाजिक और सांस्कृतिक स्मृतियों की अनेक परतें छिपी होती हैं। AI यदि इन शब्दों का प्रयोग करता है तो वह उनके भाषिक संदर्भों का अनुकरण कर सकता है, लेकिन उनके पीछे स्थित जीवित सांस्कृतिक अनुभव का प्रश्न अलग बना रहता है।

यही कारण है कि हिंदी में AI-generated literature के मूल्यांकन के लिए केवल भाषिक शुद्धता पर्याप्त नहीं होगी। **सांस्कृतिक संवेदनशीलता और भाषिक विविधता** को भी साहित्यिक मूल्यांकन का हिस्सा बनाना होगा।

UNESCO की GenAI संबंधी guidance भी मानव agency के साथ-साथ भाषाई और सांस्कृतिक विविधता, copyright और ethical use जैसे प्रश्नों को महत्वपूर्ण मानती है।

क्या AI हिंदी साहित्य का विकल्प बन सकता है?

इस प्रश्न का उत्तर सरलता से "हाँ" या "नहीं" में देना उचित नहीं होगा।

AI हिंदी साहित्य के लिए अनेक संभावनाएँ खोल सकता है। पुराने साहित्य का डिजिटल संरक्षण, पाठों का विश्लेषण, अनुवाद, संपादन, भाषिक अध्ययन और दुर्लभ साहित्य तक पहुँच को AI आधारित तकनीकें आसान बना सकती हैं। हिंदी साहित्य को अन्य भाषाओं में और विश्व साहित्य को हिंदी में पहुँचाने में भी AI आधारित translation systems सहायक हो सकते हैं।

लेकिन दूसरी ओर, यदि साहित्यिक सृजन में AI पर अत्यधिक निर्भरता बढ़ती है तो एकरूप भाषा, clichéd अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक सरलीकरण की समस्या उत्पन्न हो सकती है। UNESCO ने भी GenAI के संदर्भ में homogenized responses तथा विविध और रचनात्मक outputs के बीच संतुलन की आवश्यकता पर चर्चा की है।

इसलिए AI को हिंदी साहित्य का **प्रतिस्थापन** मानने के बजाय उसे एक **सहायक और सहयोगी तकनीक** के रूप में देखना अधिक उचित होगा।

लेखक की भूमिका समाप्त नहीं होगी

AI के आने से यह आशंका स्वाभाविक है कि लेखक की भूमिका समाप्त हो जाएगी। लेकिन साहित्य का इतिहास बताता है कि नई तकनीकें सामान्यतः पुरानी रचनात्मक क्षमताओं को समाप्त नहीं करतीं; वे उनके स्वरूप को बदलती हैं।

कैमरे के आविष्कार से चित्रकला समाप्त नहीं हुई। सिनेमा के आने से रंगमंच समाप्त नहीं हुआ। इंटरनेट के आने से पुस्तक समाप्त नहीं हुई।

इसी प्रकार AI के आने से लेखक भी समाप्त नहीं होगा।

हाँ, लेखक की भूमिका बदल सकती है।

भविष्य का लेखक केवल शब्दों का निर्माता न होकर **विचारों का चयनकर्ता, AI-generated सामग्री का संपादक, सांस्कृतिक संदर्भों का संरक्षक और अंतिम रचनात्मक निर्णय लेने वाला व्यक्ति** हो सकता है।

इस अर्थ में लेखक की शक्ति कम होने के बजाय कुछ परिस्थितियों में और अधिक महत्वपूर्ण हो सकती है। मशीन अनेक विकल्प प्रस्तुत कर सकती है, लेकिन उन विकल्पों में से किसे स्वीकार करना है, किसे अस्वीकार करना है और किसे मानवीय अनुभव से जोड़ना है—यह निर्णय अभी भी मानवीय विवेक पर निर्भर करता है।

हिंदी साहित्य के लिए नई संभावनाएँ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी साहित्य के सामने केवल संकट लेकर नहीं आई है। इसके भीतर अनेक संभावनाएँ भी हैं।

AI की सहायता से हिंदी साहित्य की दुर्लभ पुस्तकों का डिजिटलीकरण और searchable archives तैयार किए जा सकते हैं। बड़े साहित्यिक corpus का computational analysis किया जा सकता है। किसी विशेष काल, लेखक, विषय या शब्दावली के व्यापक अध्ययन में तकनीकी सहायता प्राप्त हो सकती है।

इसी प्रकार हिंदी साहित्य के अनुवाद और वैश्विक प्रसार में AI महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। हिंदी की अनेक महत्वपूर्ण रचनाएँ अभी भी विश्व की अनेक भाषाओं के पाठकों तक पर्याप्त रूप से नहीं पहुँच पाई हैं। यदि तकनीक का उपयोग सावधानी और मानवीय संपादन के साथ किया जाए, तो हिंदी साहित्य की अंतरराष्ट्रीय पहुँच में वृद्धि हो सकती है।

इस प्रकार AI को हिंदी साहित्य के लिए केवल खतरे के रूप में देखना उसके संभावित योगदान को सीमित करना होगा।

नैतिकता और उत्तरदायित्व

AI-generated साहित्य के साथ एक महत्वपूर्ण प्रश्न **उत्तरदायित्व** का है।

यदि किसी AI-generated रचना में किसी समुदाय के प्रति आपत्तिजनक सामग्री आती है, किसी लेखक की शैली की अनुचित नकल होती है अथवा किसी अन्य रचना से अत्यधिक समानता दिखाई देती है, तो उसकी जिम्मेदारी किसकी होगी?

AI स्वयं नैतिक उत्तरदायित्व नहीं ले सकता। अंतिम उत्तरदायित्व उस मनुष्य या संस्था का ही होना चाहिए जो AI-generated सामग्री को सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत करती है।

इसीलिए AI के उपयोग में पारदर्शिता आवश्यक है। लेखक यदि किसी रचना के निर्माण में AI का महत्वपूर्ण उपयोग करता है तो उसके उपयोग की प्रकृति को स्पष्ट करना साहित्यिक ईमानदारी का हिस्सा बन सकता है।

UNESCO का human-centred approach भी इसी प्रकार human agency, ethical validation और responsible use पर बल देता है।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का साहित्य में प्रवेश साहित्य की समाप्ति नहीं, बल्कि साहित्य की अवधारणा के एक नए चरण का आरंभ है। AI ने हमें ऐसे प्रश्नों के सामने खड़ा किया है

जिन्हें साहित्य लंबे समय से अलग-अलग रूपों में पूछता रहा है—लेखक कौन है, रचना क्या है, सृजनात्मकता कहाँ से आती है और किसी पाठ को प्रामाणिक क्या बनाता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता इन प्रश्नों के उत्तर नहीं देती; बल्कि उन्हें और अधिक जटिल बनाती है।

हिंदी साहित्य के लिए चुनौती यह नहीं है कि वह AI को स्वीकार करे या अस्वीकार करे। वास्तविक चुनौती यह है कि वह इस नई तकनीक के साथ **आलोचनात्मक, नैतिक और रचनात्मक संबंध** कैसे विकसित करता है।

साहित्य की शक्ति केवल भाषा उत्पन्न करने में नहीं है। उसकी वास्तविक शक्ति मनुष्य के अनुभव को अर्थ देने में है। AI भाषा का निर्माण कर सकती है, शैली का अनुकरण कर सकती है और अनेक प्रकार के पाठ उत्पन्न कर सकती है; लेकिन साहित्य को सामाजिक स्मृति, सांस्कृतिक अनुभव, मानवीय पीड़ा, प्रेम, संघर्ष, स्वप्न और प्रश्नों से जोड़ने का कार्य अभी भी मानवीय चेतना के केंद्र में है।

इसलिए आने वाले समय में हिंदी साहित्य का भविष्य **"मानव बनाम मशीन"** के संघर्ष में नहीं, बल्कि **"मानव और मशीन के बीच रचनात्मक संबंध"** में अधिक दिखाई देता है।

आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी साहित्य AI से भयभीत न हो और न ही उसके प्रति अंध-आकर्षण विकसित करे। उसे AI को एक ऐसी तकनीक के रूप में स्वीकार करना चाहिए जिसका उपयोग साहित्य के विस्तार, संरक्षण, अनुवाद और नए प्रयोगों के लिए किया जा सकता है, लेकिन साहित्यिक मूल्य, मानवीय संवेदना और रचनात्मक उत्तरदायित्व के अंतिम मानदंडों को तकनीक के हवाले नहीं किया जा सकता।

अंततः साहित्य की प्रामाणिकता केवल इस बात में नहीं है कि **"किसने लिखा?"**, बल्कि इस बात में भी है कि **"किस अनुभव, किस चेतना, किस उद्देश्य और किस उत्तरदायित्व के साथ लिखा गया?"** कृत्रिम बुद्धिमत्ता का युग हिंदी साहित्य को इसी प्रश्न पर पुनर्विचार करने के लिए बाध्य कर रहा है।

संदर्भग्रंथ सूची

1. Nath R. Artificial Intelligence (AI): An evolution toward an "authorless" literature. World Futures. 2025;81(4):291-298. doi:10.1080/02604027.2025.2499193.
2. "The Language of the Digital Air": AI-generated literature and the performance of authorship. Humanities. 2025;14(8):164. doi:10.3390/h14080164.
3. Watson S, Brezovec E, Romic J. The role of generative AI in academic and scientific authorship: an autopoietic perspective. AI Soc. 2025;40:3225-3235.
4. Setiawan R, Nuryanto ABF, Pechinthorn K. Ethical questions on AI-generated literature: the evolution of literary creativity in the post-humanistic era. Humanis. 2025;29(3).

5. Barthes R. The death of the author. In: Heath S, translator. Image-Music-Text. New York: Hill and Wang; 1977. p. 142-148.
6. Foucault M. What is an author? In: Bouchard DF, editor. Language, Counter-Memory, Practice. Ithaca: Cornell University Press; 1977. p. 113-138.
7. Miao F, Holmes W. Guidance for generative AI in education and research. Paris: UNESCO; 2023.
8. Dhyani N, Thakur N, Kulshrestha B. Reimagining authorship in the age of artificial intelligence: a posthuman reading of literary creativity. Journal of Asia Entrepreneurship and Sustainability. 2026.

Dr. A. V. Nandaniya
Associate Professor,
Shri V. M. Mehta Muni. Arts & Commerce College, Jamnagar.